संवाद

प्राथमिक स्तर पर शैक्षिक गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए ज़रूरी है – प्राथमिक शिक्षकों को नए प्रयोगों के लिए अभिप्रेरित करना। आज ज़रूरत इस बात की है कि शिक्षकों में यह विश्वास पैदा किया जाए कि वे अपने विद्यालय में, अपनी परिस्थितियों में और अधिक बेहतर कार्य कर सकते हैं। 'प्राथमिक शिक्षक' पत्रिका इस शैक्षणिक गुण को निखारने और शिक्षकों में इस विश्वास को दृढ़ करने की दिशा में एक कदम है।

प्रस्तुत अंक में मुख्यतः बच्चों को रचनात्मक एवं आत्मनिर्भर बनाने, सीखने की जिज्ञासा का निर्माण करने, अभिव्यक्ति की आज़ादी और वस्तुओं को देखने के नज़रिए से जुड़े लेख हैं। सीखना अपने आप में एक सक्रिय व सामाजिक गतिविधि है। सभी बच्चे स्वभाव से ही सीखने के लिए प्रेरित रहते हैं और उनमें सीखने की क्षमता होती है। सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में अभिभावकों की अहम भूमिका होती है। शिक्षकों को अभिभावकों के संपर्क में रहना चाहिए। उन्हें विद्यार्थियों के विकास का निरंतर आकलन करते रहना चाहिए, क्योंकि यह विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ-साथ उनके शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और भाषायी विकास को जानने में भी सहायक है।

कहानी सुनने और भिन्न-भिन्न वस्तुओं के वैज्ञानिक प्रयोग से बच्चों में जिज्ञासा, सीखने के प्रति उत्साह और रचनात्मक मनोवृत्ति का निर्माण होता है। इन्हीं क्रियाकलापों के माध्यम से बच्चों द्वारा कठिन समझे जाने वाले विषय गणित और विज्ञान भी उनके लिए सरल हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षकों एवं अभिभावकों को चाहिए कि वे बच्चों को कठिन परिस्थितियों से अवगत कराते हुए उनका उचित मार्गदर्शन करें। उनका अनुभव एवं परामर्श बच्चों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रत्येक बच्चे का अपना एक नज़रिया होता है। वह अपने आस-पास की वस्तुओं को अपने नज़रिये से देखता है। *बालमन* इसी की अभिव्यक्ति है। पत्रिका के अंत में एक बच्चे ने भूतपर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे अब्दुल कलाम पर अपनी राय व्यक्त की है।

इस पत्रिका को पढ़ने के बाद निश्चित रूप से सीखने-सिखाने, विशेष रूप से पढ़ने-लिखने, में बदलाव आएगा। उम्मीद है कि यह संयुक्तांक आप को पसंद आएगा।

अकादमिक संपादक

0- + 2015.indd 3 5/26/2017 9:14:49 AM

शिक्षकों के लिए आवश्यक तैयारी

(क) शिक्षकों की ऐसी तैयारी ज़रूरी है जिससे कि वे बच्चों का खयाल रख सकें और उनके साथ रहना पसंद करें।

(ख) सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक संदर्भों में बच्चों को समझ सकें।

(ग) ग्रहणशील और निरंतर सीखने वाले हों।

(घ) शिक्षा को अपने व्यक्तिगत अनुभवों की सार्थकता की खोज के रूप में देखें तथा ज्ञान निर्माण को मननशील अधिगम की लगातार उभरती प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करें।

(ड़) ज्ञान को पाठ्यपुस्तकों के बाह्य ज्ञान के रूप में न देखकर साझा संदर्भों और व्यक्तिगत संदर्भों में उसके निर्माण को देखें।

(च) समाज के प्रति अपना दायित्व समझें और बेहतर विश्व के लिए काम करें।

(छ) उत्पादक कार्य के महत्व को समझें तथा कक्षा के बाहर और अंदर व्यावहारिक अनुभव देने के लिए कार्य को शिक्षण का माध्यम बनाएँ।

(ज) पाठ्यचर्या की रूपरेखा, उसके नीतिगत निहितार्थ एवं पाठों का विश्लेषण करें।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा – 2005, पृ. सं. 122

0- + 2015.indd 4 5/26/2017 9:14:49 AM